

श्री इन्द्राक्षी भगवती

पूजा, जप, कवच तथा स्तोत्र



सम्पादक

अमरनाथ साबनी

प्रकाशक : ब्राह्मण महामण्डल, काश्मीर.
गणेश रोड, श्रीनगर, काश्मीर।

प्रथम संस्करण : १०००/१९८९ मूल्य : २/- रु०

मुद्रक : वैली प्रिंटिंग प्रेस, बडशाह ब्रिज श्रीनगर।

कर्मयोगी दिवङ्गत श्री केशवभट्ट ज्योतिषी

की

पुण्यस्मृति में, जिन्होंने कठिन परिश्रम करके

काश्मीर में धार्मिक तथा कर्मकाण्ड साहित्य का

प्रकाशन, करके सनातन धर्म

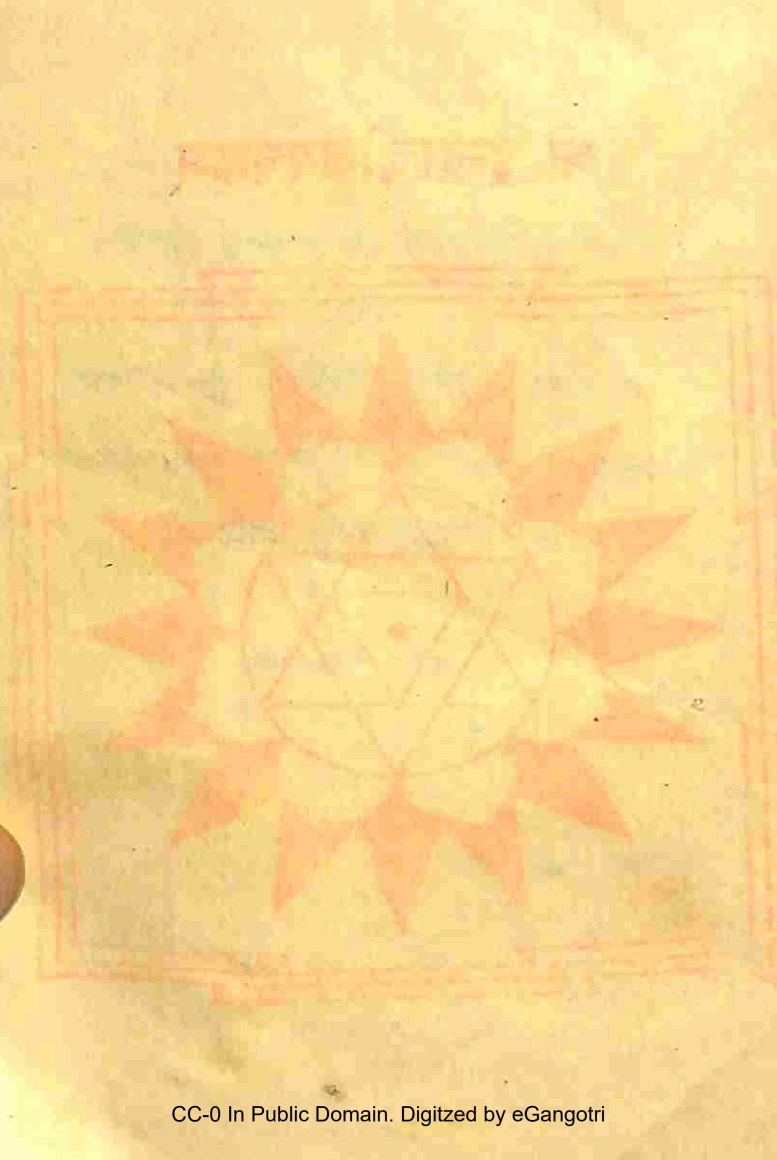
का

पुनरुत्थान किया।

अमरनाथ साबनी

श्री इन्द्राक्षीजयचक्रम्





प्रस्तावना

इस असार संसार में आविर्भूत होकर प्राणी विशेष कर मानव सुख शांति की खोज में अनन्त काल से भटकता रहा है। अज्ञानवश वह कंचन और कामिनी की प्राप्ति के लिए अनेक दौडधूप करता है। परन्तु इन सब पदार्थों को अर्जित करने पर भी उसे स्थाई सुख का अनुभव नहीं होता। वह समझता है कि उस की यह दौडधूप केवल मृगमरीचिकावत् है और जिस वास्तविक सुख शान्ति की उसे अभिलाषा है उससे वह वंचित है। इस न्यूनता की पूर्ति तथा शान्ति लाभ के लिए मनुष्य विशेष पथ - प्रदर्शक अथवा आचार्य की दीक्षा लेना चाहता है। वह भक्ति भावना से उपदेश पाता है उस परम शक्ति की शरण में जाने का, जिसकी एकमात्र कृपादृष्टि से मनुष्य परम कल्याण और परमशान्ति का पात्र बनता है ऐसा पात्र बनने के लिए आवश्यक है कि मनुष्य में मानसिक तथा अध्यात्मिक गुणों का विकास हो जो उसे श्रद्धा पूर्वक उपासना से संभव हो सकता है अर्थात् आराध्य देवी देवता के प्रति निरंतर चिन्तन। इस प्रकार श्रद्धापूर्वक उपासना से मनुष्य के अन्तःकरण पवित्र बनते हैं और मनुष्य अपनी इच्छा के अनुरूप निज आराध्य देवी, देवता का आकलन करता है।

कहना न होगा इस पथ का अनुगामी होने के लिए विभिन्न मार्ग हैं पर लक्ष्य एक है। काश्मीर में प्राचीन काल से यहां की हिन्दु जनता ने शक्ति पूजा विशेष रूप से अपनाई है। शक्ति स्वरूपा भगवती जगदम्बा के अनेक रूप बताये गये हैं और प्रत्येक स्वरूप की अनुकंपा अर्जित करने निमित्त उपासना की पद्धति जैसे ध्यान स्तोत्र, जप, कवच तथा यंत्र साधक के लिए आचार्यों ने विभिन्न ठहराई है। इस प्रकार उपासक के लिए निज आराध्य देवी के आकलन के लिए उपरोक्त अंगों की जानकारी का होना अनिवार्य है। एक उपासक के लिए इन अंगों का विनियोग ही संपूर्ण पूजा मानी जाती है।

यहां यह स्पष्ट करना आवश्यक बनता है कि परम शक्ति जगदम्बा के कुछ रूप ऐसे भी हैं जिन की उपासना गूढ मानी जाती है और साधारण व्यक्ति के लिए कुछ असाध्य भी हैं। इसके दृष्टिगोचर यहां के आचार्यों ने महाशक्ति अभयङ्करी भगवती इन्द्राक्षी का पूजन सर्वसाधारण हिन्दु के लिए प्रचलित रखा है जो साधक के लिए सरल साध्य है और भयनाशक रोग-नाशक कष्टनिवारक सम्पदादायक तथा मानवर्धक आदि जैसे चमत्कार पूर्ण फल देने वाला है परन्तु खेद है कि परिस्थितिवश जनता की सुविद्या के लिए इसके कवच आदि अंगों की उपलब्धि विस्तृत रूप से प्रयः प्राप्त नहीं। इसलिए आस्तिक जनों के अनुरोध पर ब्राह्मण

महामण्डल ने देवी भक्त श्री ग्रमरनाथ जी सावन्यू (जो मण्डल के प्रकाशन मंत्री एवं एक सतर्क सदस्य भी है) को इस न्यूनता की पूर्ति के लिये ग्राग्रह किया, ग्राप ने महामण्डल की प्रार्थना को स्वीकार कर काफी प्रयास के ग्रनन्तर भगवती इन्द्राक्षी का सर्वांग कवच स्तोत्र सहित मण्डल को प्रस्तुत किया जिसे महामण्डल ने सर्वसाधारण हिन्दू जनता की सुविधा के लिए प्रकाशित करके हिन्दू जनता की मांग पूरी की।

जानकी नाथ चन्द्रा
मुख्य मन्त्री
ब्राह्मण महामण्डल, श्रीनगर, काश्मीर।

ॐ

संपादकीय

प्रत्येक जीव किसी न किसी वस्तु को उपासना करता है। उपासना शब्द का अर्थ है उप (निकट) आसन (बैठना) अर्थात् प्रियवस्तु के प्रति निरंतर चिंतन तथा कर्म द्वारा पास में रहना। उपासना दो प्रकार की है आत्म तथा अनात्म। प्रथम उपासना भवसंतापों से मुक्त होने के लिए सच्चिदानन्द परमब्रह्म पराशक्ति की कीजाती है। दूसरी उपासना अनात्म संसारिक पर्दाथों की होती है जैसे कंचन, कामिनी, यश, प्रतिष्ठा इत्यादि ताकि इसे संसारिक अस्थाई सुख प्राप्त हो। परन्तु इन अनात्म विषयों से आत्मज्ञान तथा आत्म शांति दुर्लभ है। यतः जब विश्व ही नश्वर है जैसे शास्त्र कहते हैं "विगतः श्वः यस्मात् स इति विश्वः" अर्थात जिसमें कल का कोई भरोसा ही नहीं है। अतः तज्जन्य पदार्थ कैसे सुखद तथा शान्ति प्रद हो सकते हैं। अतः वास्तविक आनंद प्राप्ति के लिए करुणामयीपराशक्ति की शरण में होना हो श्रेयस्कर है जिसे भक्त को संसारिक दुःखों से छुटकारा भी मिलता है तथा अन्त में परम गति भी मिलती है जैसे :—

यत्रास्ति भोगो न च तत्र मोक्षो।
यत्रास्ति मोक्षो न च तत्र भोगः।।

श्री सुन्दरी सेवक तत्पराणाम्।
भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एव ॥

(इस अभिप्राय से) भारत में महाशक्ति पूजन आरम्भ से प्रचलित है तथा काश्मीर में इसे एक विशेष स्थान प्राप्त है। यह प्रांत शारदापीठ के नाम से प्रसिद्ध है। यहां मां की पूजा भिन्न २ रूपों में जैसे शारिका, ज्वाला, क्षीरभवानी, शैलपुत्री, भद्रकाली तथा इन्द्राक्षी भगवती की प्राचीन काल से प्रचलित है। इन में श्री इन्द्राक्षी भगवती का स्तोत्र अधिक प्रचलित है। परन्तु खेद है कि यहां आजतक इन्द्राक्षी कवच का प्रकाशन नही हुआ है। तथा पूजा के लिए इन्द्राक्षी यंत्र भी उपलब्ध नही हैं। यह इन्द्राक्षी स्तोत्र भी भारत में प्रचलित अन्य इन्द्राक्षी स्तोत्रों के कई श्लोकों से वञ्चित रहा है। इन तथ्यों को सामने रखकर मां की प्रेरणा से वर्तमान पत्रक तय्यार किया गया है। इस का सम्पादन कई ग्रन्थों जैसे देवीरहस्य, तंत्ररहस्य तथा साधनाङ्क इत्यादि का अवलोकन करके किया गया है। प्रत्येक पूजा में पूजन, जप, कवच, स्तोत्र तथा यंत्र या मूर्ति वांछनीय है, जिसे भक्तों को पूर्ण लाभ प्राप्त होता है। (अन्य अन्तर्पूजा, रोग निवारण इत्यादि अनुष्ठानों की विधि गुरु गम्य है)।

उपासना के लिए मन वाणी तथा कर्म से शुद्ध

होना अनिवार्य्य है। धन दान से, वाणी भगवन्नाम से शरीर हिंसा, असत्य तथा विषय भोगों के त्याग से, अन्तः शुद्धि ध्यान, प्रणायाम तथा आचमन से होती है। तथा पवित्र स्थान, शुद्ध आसन (कुशा या कम्बल का) भी आवश्यक हैं। सर्वोपरि अटूट भक्ति तथा अटल विश्वास अत्यावश्यक हैं।

जिन महानुभावों ने इस पत्रक का मुद्रण करने के लिए युक्त सुझाव तथा प्रोत्साहन दिए उन में सर्व श्री संतोषी जी, पीताम्बर जी हण्डू शास्त्री, स्व० श्री नीलकण्ठ नेहरु, सोमनाथ ज़ाडू (सुमन), दीनानाथ शास्त्री तथा डा० बालकृष्ण रैणा के नाम उल्लेखनीय हैं। मातृभक्त श्री जानकी नाथ रैणा के प्रति भी धन्यवाद प्रकट करता हूं जिन्हों ने इस पत्रक के लिए विना मूल्य कागद सुलभ किया।

भक्तचरणरज
अमरनाथ साबनी
प्रकाशन मंत्री ब्रा. म. म. काश्मीर

ॐ श्री गणेशाय नमः

मार्जन—पूर्वाभिमुख होकर देहशुद्धि के लिए सिद्धासन में बैठकर अपने शरीर पर नीचे लिखे मंत्र से जल छिडकें :-

अपवित्रः पवित्रोवा सर्वावस्थां गतोऽपिवा ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं बाह्याभ्यन्तरतः शुचिः ।।

तत्व शुद्धि के लिए नीचे लिखे मंत्रों से चार बार आचमन करें।

१. ॐ आत्मतत्वं शोधयामि नमः स्वाहा
२. ,, विद्यातत्वं ,, ,, ,,
३. ,, शिवतत्वं ,, ,, ,,
४. ,, सर्व तत्वं ,, ,, ,,

(तर्पण करें) ॐ अस्य श्री इन्द्राक्षी कवचस्तोत्र महा मंत्रस्य शची पुरन्दर ऋषिः अनुष्टप छन्दः श्री इन्द्राक्षी भगवती देवता, लक्ष्मी : बीजं, भुवनेश्वरी शक्तिः, माहेश्वरी कीलकम्, गायत्री सावित्री सरस्वती कवचं आत्मनः वाङ्.मनः कायोपार्जित पाप निवारणार्थम् श्री इन्द्राक्षी भगवती प्रसन्नार्थम् कवचस्तोत्रमहामंत्रस्य पाठे जपे च विनियोगः

(करन्यास)

१ ॐ महालक्ष्म्यै अङ्गुष्टाभ्यां नमः
२ ,, भुवनेश्वर्यै तर्जनीभ्यां ,,
३ ,, माहेश्वर्यै मध्यमाभ्यां ,,
४ ,, वज्रहस्तायै अनामिकाभ्यां ,,
५ ,, सहस्त्रनयनायै कनिष्टकाभ्यां ,,
६ ,, इन्द्राक्ष्यै करतलकरपृष्टाभ्यां ,,

(अङ्गन्यास)

१ ॐ महालक्ष्म्यै हृदयाय नमः
२ ,, भुवनेश्वर्यै शिरसे स्वाहा
३ ,, माहेश्वर्यै शिखायै वषट्
४ ,, वज्रहस्तायै कवचाय हुं
५ ,, सहस्त्रनयनायै नेत्राभ्यां वौषट्
६ ,, इन्द्राक्ष्यै अस्त्राय फट्

(मंत्र) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं इन्द्राक्षी क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं स्वाहा।

इस मंत्र से प्राणायाम कीजिए।

(ध्यानम्)

ॐ इन्द्राक्षी द्विभुजां देवीं पीतवस्त्रधरां शुभाम्
वामे वर्जधरां सव्यहस्तेऽभयवर प्रदाम्

सहस्त्रनेत्रां सूर्य्याभां नानालंकार भूषिताम्
प्रसन्नवदनां नित्यामप्मरोगण सेविताम्

श्री दुर्गां सौभ्यवदनां पाशांकुशधरां पराम्
त्रैलोक्यमोहिनीं देवीं भवानीं प्रणमाम्यहम्

(गायत्री)

शचीप्तये विद्महे पाकशासनाय धीमहि तन्नों
इन्द्रः प्रचोदयात् ।। (तीन बार पढिए)

(दिग्बन्धनम्)

इस मंत्र से तीन बार अपने सिर के इर्द गिद धायें से बायें की ओर हाथ फेरिए :-

ॐ भूर्भुवः स्वरोमिति दिग्बन्धनम्

(पंचोपचार, अर्थात् नीचे लिखे मंत्रों से गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य इत्यादि देवी के प्रति चढाए, यह उपचार द्रव्यों के अभाव में मानसिक भी होसकते हैं)

ॐ लं पृथिव्यात्मिकायै इन्द्राक्षी भगवत्यै गन्धं
समर्पयामि ।

,, हं आकाशात्मिकायै ,, ,, पुष्पैः पूजयामि ।

,, यं वाय्वात्मिकायै ,, ,, धूपमघ्रापयामि ।

,, रं अग्न्यात्मिकायै ,, ,, दीपं दर्शयामि ।

,, वं अमृतात्मिकायै ,, ,, अमृतंमहानैवेधम्
निवेदयामि ।

,, सं सर्वात्मिकायै ,, ,, सर्वोपचारं
समर्पयामि ।

पहले लिखे हुए देवी के मंत्र का जप कीजिए। जप का महत्व उपासना में अत्यावश्यक तथा प्रधान है, प्रत्येक पूजा में उपास्य के मंत्र का जप अनिवार्य्य है, जैसे :—

एकदा वा भवेत्पूजा न जपेत पूजनं विना।
जपान्ते वा भवेत् पूजा पूजान्ते वा जपेत् मनुम ।।

—0—

इन्द्राक्षी कवचम्

इन्द्रः उवाच

इन्द्राक्षी पूर्वतः पातु पात्वाग्नेय्यां दशेश्वरी ।
कौमारी दक्षिणे पातु नैऋत्यां पातु पार्वती ॥
वाराही पश्चिमे पातु वायव्ये नारसिंह्यपि ।
उदीच्यां कालरात्री मामैशन्यां सर्वशक्तयः ॥
भैरव्यूर्ध्वं सदापातु पात्वधो वैष्णवी सदा ।
एवं दशदिशो रक्षेत् सर्वाङ्ग भुवनेश्वरी ॥

ॐ नमो भगवत्यै इन्द्राक्ष्यै महालक्ष्म्यै सर्वजन वशंकर्यै सर्वदुष्टग्रहस्तम्भिन्यै स्वाहा ।

ॐ नमो भगवति पिङ्गलभैरवि त्रैलोक्यलक्ष्मि त्रैलोक्यमोहिनीन्द्राक्षि मां रक्ष २ हुं फट् स्वाहा ।

ॐ नमो भगवति भद्रकालि महादेवि कृष्णवर्णे तुङ्गस्तनि शूर्पहस्ते कवाटवक्षःस्थले कपालधरे परशुधरे चापधरे विकृतरूपधरे विकृतरूपे महाकृष्णसर्पयज्ञोपवीतिनि भस्मोद्धूलितसर्वगात्रीन्द्राक्षि मां रक्ष २ हुं फट् स्वाहा ।

ॐ नमो भगवति प्राणेश्वरि पद्मासने सिंह वाहने महिषासुर मर्दिनि उष्णज्वर पित्तज्वर वातज्वर श्लेष्मज्वर कफज्वर आलापज्वर संनिपातज्वर कृत्रिमज्वर कृत्यादिज्वर एकाह्निकज्वर द्व्याह्निकज्वर त्र्याह्निकज्वर चतुराह्निकज्वर पञ्चाह्निकज्वर पक्षज्वर मासज्वर षण्मासज्वर संवत्सरज्वर सर्वाङ्गज्वरान् नाशय २ हर २ जहि २ दह २ पच २ ताडय २ आकर्षय २ विद्विषः स्तम्भय २ मोहय २ उच्चाटय २ हुं फट् स्वाहा ॐ ह्रीं

ॐ नमो भगवति प्राणेश्वरि पद्मासने लम्बोष्टि कम्बुकण्ठिके कलिकाम्रूपिणि परमंत्र परयंत्र परतंत्रप्रभेदिनि प्रतिपक्षविध्वंसनि परबल दुर्गविमर्दिनि शत्रुकरच्छेदिनि सकलदुष्ट ज्वरनिवारिणि भूतप्रेतपिशाच ब्रह्मराक्षस यक्ष यमदूत शाकिनी डाकिनी कामिनी स्तम्भिनी मोहिनी वशंकरी कुक्षिरोग शिरोरोग नेत्ररोग

क्षयापस्मार कुष्टादि महारोग निवारिणि मम सर्वरोगान् नाशाय २ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः हुं फट् स्वाहा ।

ॐ ऐं श्रीं हुं दुं इन्द्राक्षि मां रक्ष रक्ष ममशत्रून् नाशय २ जलरोगान् शोषय २ दुःखव्याधीन् स्फोटय २, क्रूरानरीन् भञ्जय २ मनोग्रन्थि प्राणग्रन्थि शिरोग्रन्थीन् काटय २, इन्द्राक्षि मां रक्ष २ हुं फट् स्वाहा ।

ॐ नमो भगवति माहेश्वरी महाचिंतामणि दुर्गे सकल सिद्धेश्वरि सकल जन मनोहारिणि काल कालरात्र्यनले अजिते अभये महाघोररूपे विष्णुरूपिणि मधुसूदनि महाविष्णुस्वरूपिणि नेत्रशूल कर्णशूल कटिशूल पक्षशूल पाण्डुरोग-कामलादीन् नाशय नाशय वैष्णवि ब्रह्मास्त्रेण विष्णुचक्रेण रुद्रशूलेन यमदण्डेन वरुणपाशेन वासववज्रेण सर्वानरीन् भञ्जय २ यक्षग्रह

राक्षस ग्रह स्कन्द ग्रह विनायकग्रह, बालग्रह चौरग्रह कूष्माण्डग्रहादीन् निगृह्ण २ राजयक्ष्म क्षयरोगतापज्वर निवारिणि मम सर्वज्वरान् नाशय २ सर्वग्रहान् उच्चाटय उच्चाटय हुं फट् स्वाहा।

(इति कवचं समाप्तम्)

(इन्द्राक्षी स्तोत्रम्)

श्री इन्द्र उवाच

इन्द्राक्षी नाम सा देवी दैवतैः समुदाहृता।
गौरी शाकम्भरी देवी दुर्गा नाम्नीति विश्रुता॥
कात्यायनी महादेवी चण्डघण्टा महातपाः।
सावित्री साचगायत्री ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी॥
नारायणी भद्रकाली रुद्राणी कृष्णपिङ्गला।
अग्निज्वाला रुद्रमुखी कालरात्री तपस्विनी॥
मेघश्यामा सहस्राक्षी विष्णुमाया जलोदरी।
महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला॥

आनन्दा भ नन्ता रोगहर्त्री शिवप्रिया ।
शिवदूती करालीच प्रत्यक्षपरमेश्वरी ॥
इन्द्राणी चेन्द्ररूपाच इन्द्रशक्ति परायणा ।
महिषासुरसंहर्त्री चामुण्डा गर्भदेवता ॥
वाराही नारसिंही च भीमाभैरव नादिनी ।
श्रुतिः स्मृतिः धृतिः मेधा विद्यालक्ष्मी सरस्वती ॥
अनन्तविजया पूर्णा मानस्तोषाऽपराजिता ।
भवानी पार्वती दुर्गा हैमवत्यम्बिका शिवा ॥
शिवाभवानी रुद्राणी शङ्करार्धशरीरिणी ।
सदा संमोहिनीदेवी सुन्दरी भुवनेश्वरी ॥
एकाक्षरी पराब्रह्मी स्थूलसूक्ष्म प्रवर्तिनी ।
नित्य सकल कल्याणी भोगमोक्ष प्रदायिनी ॥
ऐरावतगजारूढा वज्रहस्ता वरप्रदा ।
भ्रामरी कञ्चिकाक्षाक्षी क्वणन्माणिक्य नूपुरा ॥
त्रिपाद्भस्म प्रहरणा त्रिशिरारक्तलोचना ।
शिवा च शिवरूपाच शिवभक्ति परायणा ॥
मृत्युञ्जया महामाया सर्वरोग निवारिणी ।
ॐ ऐन्द्री देवी सदा काले शांतिमाशुकरोतुमे ॥

क्षमापुष्प

एतैर्नामपदैर्दिव्यैः स्तुता शक्रेण धीमता ।
आयुरारोग्यमैश्वर्यमऽक्षयसम्यति कारकम् ॥
क्षयापस्मार कुष्टादि तापज्वर निवारकम् ।
शतमावर्तयेद् यस्तु मुच्यते व्याधिबन्धनात् ॥
आवर्तयेद् सहस्त्रेण लभते वाञ्छितं फलम् ।
राजावशमवाप्नोति सत्यमेव न संशयः ॥
लक्ष्यमेकं जपेद्यस्तु साक्षात्देवीं सपश्यति ।
त्रिकालंतुपठेत् नित्यं धनधान्यांश्च सम्पदः ॥
अर्धरात्रे पठेत् नित्यं मुच्यते व्याधिबन्धनात ।
ऐन्द्रस्तोत्रमिदं पुण्यं जपे तु फलवर्धनम् ॥
विनाशाय तु रोगाणाम् अपमृत्यं हरत्युत ।
राज्यार्थी लभते राज्यं धनार्थी विपुलं धनम् ॥
इच्छा कामं तु कामार्थी धर्मार्थी धर्ममऽव्ययम् ।
विद्यार्थी लभते विद्यां मोक्षार्थी परमं पदम् ॥

इन्द्रेण कथितं स्तोत्रं सत्यमेव न संशयः
या माया मटधुकैभ प्रमथिनी या महिषोन्मूलिनी ।
या धूम्रेक्षण चण्ड मुण्डमथयथिनी या रक्तबीजाशिनी
शक्तिः शुम्भनिशुम्भदैत्यदलिनी या सिद्धलक्ष्मी परा ।
सा देवी नवकोटिमूर्तिसहिता मां पातु माहेश्वरी ॥
जप्तं पापहरं नुतं बलकरं सम्पूजितं श्रीकरम् ।
ध्यातं मानकरं स्तुतं धनकरं संभावितं सिद्धदम
गीतं सुन्दरि वाञ्छितं प्रतनुतेतेपाद पद्मद्वयं
भक्तानां भवभीति भञ्जनकरं सिद्धि-अष्टदं पातु नः
माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती काली कला मालिनी
मातङ्गी विजयाजया भगवती देवी शिवा शाम्भवी
शक्तिः शंकर वल्लभा त्रिनयना वाग्वादिनी भैरवी
ह्रींकारी त्रिपुरा परा परमयी माताकुमारी त्वसि

(तर्पण)

अनेन यन्त्रपाठेन आत्मनो वाङमनः कायोपार्जित
पाप निवारणार्थं श्रीइन्द्राक्षी देवी प्रीत्यर्थं भगवती

अमा कामा चर्चाङ्गी टङ्कधारिणी तारा पर्वती यक्षिणी श्री शारिकाभगवती श्री शारदाभगवती श्री महाराज्ञीभगवती श्री ज्वालाभगवती व्रीडा-भगवती वैखरीभगवती वितस्ताभगवती गङ्गा-भगवती यमुनाभगवती कालिकाभगवती सिद्धलक्ष्मी महालक्ष्मी महात्रिपुरसुन्दरी सहस्रनाम्नी देवी भवानी सपरिवारा सवाहना सायुधा साङ्गा प्रीयतां प्रीत्यास्तु । (साष्टाङ्ग प्रणाम करें)

ॐ भूर्भुवः स्वरोमिति दिग्विमोकः

(बाएं से दाहिने की ओर अपने सिर के ऊपर हाथफेरें)

(थोडे तर्पन जल से शरीर का मार्जन देदें)

ॐ शांति ३

